1857 में सीकर ठिकाने में जन आन्दोलनों एवं विद्रोह की घटनाओं का अध्ययन

*रवि

भूमिका

दिल्ली की बादशाह के विघटित होने के बाद ही यहां अंग्रेजों को अपने पांव पसारने का अवसर मिला। भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध तीव्र असंतोष बढ़ता जा रहा था। अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति और आर्थिक शोषण ने इस संतोष को ओर अधिक तीव्र कर दिया। सन् 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम इसी तीव्र असंतोष का परिणाम था। ब्रिटिश विद्वानों ने इसे सैनिक विद्रोह या गदर कहा है, लेकिन यह उचित नहीं है। वीर सावरकर ने इसे भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहा है। अंग्रेजों को पहली बार भारतीयों के संगठित विरोध का सामना करना पड़ा। सीकर जिले ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1857 की क्रांति के समय अंग्रेजी राज के विरूद्ध जन चेतना जगाने वाले डूंगजी जवाहर जी सीकर के बठोठ पाटोदा के रहने वाले थे। लोठिया जाट और करणा भील डूंगजी जवाहर जी के साथी थे कहा जाता है कि इसी क्षेत्र में तात्या टोपे ने 1857 की क्रांति के समय शरण प्राप्त की थी। जिले के पचार गांव के रहने वाले गोविंद नारायण पुरोहित हिन्दुस्तानी ने भी आजादी के वक्त काफी संघर्ष किया।

प्रस्तावना

राजस्थान में सामन्तवाद के सबसे क्रूर और घृणित रूप अंग्रेजों के शासनकाल की देन है। परन्तु इस काल के आरम्भ होने के साथ ही उस शासन का विरोध भी आरम्भ हो गया था। सन् 1857 ई. से पहले ब्रिटिश फौज के कुछ सैनिकों ने सीकर में विद्रोह किया था। इस प्रसंग में डूंगजी और जवाहर जी प्रसिद्ध हुए और उन पर लोकगीत रचे गए। राजस्थान स्वतन्त्रता संग्राम के अनुसार 1818 ई. में अंग्रेजों ने संधि की। शेखावाटी क्षेत्र के लोगों ने इसका विरोध किया। विरोध के दमन के लिए अंग्रेजों ने शेखावटी ब्रिगेड संगठित किया। 1834 ई. में डूंगजी के नेतृत्व में इस ब्रिगेड के कुछ सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। 1838 ई. में अंग्रेजों ने **डूंगजी** को पकड़ लिया और उन्हें आगरे के किले में कैद कर लिया। **जवाहर जी** ने अपने सहयोगियों को लेकर किले पर हमला किया और डूंगजी को छुड़ा लिया। वहां से निकल कर इन्होंने नसीराबाद की छावनी पर हमला किया और अंग्रेजों का खजाना लूट लिया। इससे उनके साहस और शौर्य की गाथा सर्वत्र फैल गई।[1]

राजस्थान में बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, अलवर, डूँगरपुर, बाँसवाडा, कोटा, बूंदी, धौलपुर, जैसलमेर और सिरोही के शासकों की सहानुभूति अंग्रेजों के प्रति थी। लेकिन राजस्थान की वीर भूमि में स्वतन्त्रता प्रेमियों की कमी नहीं थी। **आऊवां** के ठाकुर खुशाल सिंह सहित नसीराबाद, नीमच और ऐरनपुरा की अंग्रेज सैनिक छावनियों में क्रान्ति का बिगुल बजाया। मेवाड़ में जनता ने क्रान्तिकारियों को सहयोग किया, कोटा में विद्रोह ने उग्र रूप धारण कर लिया और मेजर बर्टन के दो पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया। ठाकुर खुशाल सिंह ने अंग्रेज रेजिडेन्ट माक मासन की गर्दन अलग कर उसे आऊवां के किले पर लटका दिया, लेकिन अंग्रेज सेना ने शीघ्र ही आऊवां पर अधिकार कर लिया। आमजन ने इस क्रान्ति में अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया, लेकिन उचित नेतृत्व व शासकों के असहयोग से विद्रोह सुव्यवस्थित और सफल न हो सका।[2]

शोध उद्देश्य

1 सीकर के इतिहास में 1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम का अध्ययन करना।

2 विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों का सीकर की 1857 की क्रान्ति में योगदान का अध्ययन करना।

3 **1857 के स्वतन्त्रता संग्राम का महत्व एवं परिणाम** का अध्ययन करना।

शोध विधि

शोध विषय से सम्बन्धित प्राथमिक एवं द्वितीय दस्तावेजों को खंगालने, उनका अध्ययन करने एवं संकलन हेतु मैंने विविध विश्वविद्यालयों जैसे बीकानेर विश्वविद्यालय, जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं राजस्थान अध्ययन केन्द्र जैसे राष्ट्रीय अभिलेखागार राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, जयपुर एवं सीकर का दीर्घकालीन शोध परक भ्रमण किया, इसके अतिरिक्त मैंने उन विद्ववानो, शोधार्थियों से भी सम्पर्क किया जिन्होंने सीकर व जयपुर ठिकाने के सम्बन्धित ऐतिहासिक विषय में शोध किया हैं। इस प्रक्रिया में मैंने अभिलेखाकारो एवं पुस्तकालयों में व्यापक सामग्री का संकलन किया एवं जिसके अन्तर्गत विषय से सम्बन्धित अध्याय अनुसार प्रासंगिक सामग्री का हस्तलेखन करना, फोटो कॉपी करवाना, प्रिन्ट करवाना एवं अन्य कार्य किये।[3]

शोध परिणाम

राजस्थान में सामन्तवाद के सबसे क्रूर और घृणित रूप अंग्रेजों के शासनकाल की देन है। परन्तु इस काल के आरम्भ होने के साथ ही उस शासन का विरोध भी आरम्भ हो गया था। सन् 1857 ई. से पहले ब्रिटिश फौज के कुछ सैनिकों ने सीकर में विद्रोह किया था। इस प्रसंग में डूंगजी और जवाहर जी प्रसिद्ध हुए और उन पर लोकगीत रचे गए। राजस्थान स्वतन्त्रता संग्राम के अनुसार 1818 ई. में अंग्रेजों ने संधि की। शेखावाटी क्षेत्र के लोगों ने इसका विरोध किया। विरोध के दमन के लिए अंग्रेजों ने शेखावटी ब्रिगेड संगठित किया। 1834 ई. में डूंगजी के नेतृत्व में इस ब्रिगेड के कुछ सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। 1838 ई. में अंग्रेजों ने **डूंगजी** को पकड़ लिया और उन्हें आगरे के किले में कैद कर लिया। **जवाहर जी** ने अपने सहयोगियों को लेकर किले पर हमला किया और डूंगजी को छुड़ा लिया। वहां से निकल कर इन्होंने नसीराबाद की छावनी पर हमला किया और अंग्रेजों का खजाना लूट लिया। इससे उनके साहस और शौर्य की गाथा सर्वत्र फैल गई।[4]

सीकर में 1857 ई. का स्वतन्त्रता संग्राम

आऊवा के ठाकुर खुशाल सिंह अंग्रेजों के घोर विरोधी थे, उन्होंने अपने अंग्रेजो विरोधी संघर्ष में जोधपुर राज्य एवं अंग्रेजी सेना को बुरी तरह से परास्त किया आऊवा के ठाकुर खुशाल सिंह ने ब्रिटिश रेजीडेन्ट मैकमेसन का सिर धड़ से अलग कर दिया और उसे आऊवा के किले पर लटका दिया। आऊवा के ठाकुर को मेवाड़ के सामन्तों का भी जन समर्थन था, लेकिन दूसरे ही वर्ष जोधपुर व अंग्रेजों की संयुक्त सेना ने ठाकुर खुशाल सिंह पर आक्रमण कर दिया। किलेदार को रिश्वत देकर किले के दरवाजे खुलवा दिये एवं किले में प्रवेश कर गये।[5]

राजस्थान में बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, अलवर, डूँगरपुर, बाँसवाडा, कोटा, बूंदी, धौलपुर, जैसलमेर और सिरोही के शासकों की सहानुभूति अंग्रेजों के प्रति थी। लेकिन राजस्थान की वीर भूमि में स्वतन्त्रता प्रेमियों की कमी नहीं थी। **आऊवां** के ठाकुर खुशाल सिंह सहित नसीराबाद, नीमच और ऐरनपुरा की अंग्रेज सैनिक छावनियों में क्रान्ति का बिगुल बजाया। मेवाड़ में जनता ने क्रान्तिकारियों को सहयोग किया, कोटा में विद्रोह ने उग्र रूप धारण कर लिया और मेजर बर्टन के दो पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया। ठाकुर खुशाल सिंह ने अंग्रेज रेजिडेन्ट माक मासन की

गर्दन अलग कर उसे आऊवां के किले पर लटका दिया, लेकिन अंग्रेज सेना ने शीघ्र ही आऊवां पर अधिकार कर लिया। आमजन ने इस क्रान्ति में अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया, लेकिन उचित नेतृत्व व शासकों के असहयोग से विद्रोह सुव्यवस्थित और सफल न हो सका।[6]

28 मई, 1857 को नसीराबाद के सैनिकों ने तोपखाने पर अधिकार कर लिया। खजाना लूट लिया। एक अंग्रेज अधिकारी के टुकड़े कर दिये। अंग्रेज अधिकारी प्राण बचाकर वहां से भाग निकले। यहां से सैनिक दिल्ली कूच कर गये। नसीराबाद क्रान्ति के समाचार नीमच पहुंचे। नीमच में सैनिकों ने शस्त्रगार लूट लिया। अंग्रेज अधिकारी उदयपुर की ओर भाग गये। महाराणा ने उन्हें महलों में शरण दी। कोटा में भी अंग्रेजों के विरूद्ध आम जन और राजकीय सेना द्वारा संघर्ष किया गया। कोटा के महाराव को भी अंग्रेजों के प्रति सहयोग की नीति के कारण क्रान्तिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ा था। अंग्रेज विरोधी भावना जाग्रत करने में जयदयाल, मेहराब खां, रतनलाल व जियालाल की प्रमुख भूमिका रही। कोटा के सम्पूर्ण प्रशासन पर क्रान्तिकारियों का अधिकार हो गया। कोटा में इस दौरान लगभग पांच माह तक जन शासन रहा।[7]

कोटा में पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन था। कोटा के क्रान्तिकारियों ने मेजर बर्टन व उसके दो पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया। यहां क्रान्तिकारियों का जनता ने साथ दिया। यहां के शासक को क्रान्तिकारियों का कब्जा रहा। टोंक और शाहपुरा में अंग्रेजी सैनिकों के लिए द्वार बन्द कर दिए लेकिन सर्वमान्य नेता के अभाव में अंग्रेजों ने अपने सैनिक बल के आधार पर इस क्रान्ति का दमन कर दिया।[8]

सीकर जिले ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1857 की क्रांति के समय अंग्रेजी राज के विरूद्ध जन चेतना जगाने वाले डूंगजी जवाहर जी सीकर के बठोठ पाटोदा के रहने वाले थे। लोठिया जाट और करणा भील डूंगजी जवाहर जी के साथी थे कहा जाता है कि इसी क्षेत्र में तात्या टोपे ने 1857 की क्रांति के समय शरण प्राप्त की थी। जिले के पचार गांव के रहने वाले गोविंद नारायण पुरोहित हिन्दुस्तानी ने भी आजादी के वक्त काफी संघर्ष किया। **तांत्या टोपे** ने राजस्थान के झालावाड़ में प्रवेश किया एवं झालावाड़ पर अधिकार कर लिया। यहां के शस्त्र भण्डार पर क्रान्तिकारियों ने अधिकार कर लिया। राजस्थान में तांत्या टोपे के आगमन से क्रान्तिकारियों में नया जोश आ गया[9]

सलूम्बर के रावते **केसरी सिंह** तथा कोठारिया के सामन्त **जोध सिंह** ने **तांत्या टोपे जी** को पूरा सहयोग दिया। इसी दौरान **तांत्या टोपे जी** सीकर भी आये थे। इस समय सीकर के **राजा राव भैरू सिंह** थे जिन्होंने **तांत्या टोपे जी** का सहयोग नहीं किया, लेकिन **तांत्या टोपे जी** ने यहां के लोगों को राजनैतिक रूप से प्रेरित करने में सफलता हासिल की। नरवर के शासक **मानसिंह** ने **तांत्या टोपे जी** को अंग्रेजों के हाथों पकड़वा दिया और 1859 ई. में उसे फांसी दे दी गई, लेकिन फांसी देना सत्य नहीं है, क्रांति को कमजोर होता हुआ देखकर वह अज्ञातवास में चला गया। इसी के साथ सीकर में स्वतन्त्रता संग्राम भी समाप्त हो गया। **तांत्या टोपे जी** का सीकर की क्रान्ति में विशेष योगदान की वजह से सीकर में **तांत्या टोपे जी** का स्मारक भी है।[10]

स्वतन्त्रता सेनानी डूंगजी जवाहर जी, का सीकर की 1857 की क्रान्ति में योगदान

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में सीकर क्षेत्र के **काका–भतीजा डूंगजी–जवाहर जी** प्रसिद्ध देशभक्त हुए। डूंगजी शेखावाटी ब्रिगेड में रिसालेदार थे। बाद में वे नौकरी छोड़कर धनी लोगों से देश की आजादी के लिये धन मांगने लगे और धन नहीं मिलने पर उनके यहां डाका डालने लगे। इस धन से वे निर्धन व्यक्तियों की भी सहायता करते। इन दोनों ने अपने साथियों की सहायता से कई बार अंग्रेजी छावनियों को भी लूटा।[11]

भारतीय स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत सीकरी योद्धाओं में शेखावाटी के सीकर संस्थान के बठोठ पाटोदा के ठाकुर डूंगरसिंह (Dungji), ठाकुर जवाहर सिंह शेखावत (Jawahar ji), का पंक्तिय स्थान गिना जाता है।[12]

जयपुर राज्य की सन् 1818 ई. में अंग्रेजों के साथ संधि हुई। यह संधि शेखावाटी के स्वामियों को पसंद नहीं थी। राव हनुवन्त सिंह शाहपुरा, राव राजा लक्ष्मण सिंह सीकर और ठाकुर श्याम सिंह बिसाऊ आदि शेखावत जयपुर अंग्रेज संधि के विरूद्ध थे। फलतः शेखावाटी प्रदेश के रावजी के, लाडखानी और सल्हदीसिंहोत शेखावतों ने अपनी शक्तिसामर्थ्यानुसार अंग्रेज शासित भू–भागों में धावे मारकर अराजकता की स्थिति उत्पन्न की। बीकानेर के चुरू तथा जोधपुर के डीडवाना क्षेत्र के स्वतन्त्रता प्रेमी ठाकुरों ने शेखावाटी का अनुसरण कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती–सी दे दी। संवत् 1890 वि. राव राजा लक्ष्मण सिंह का देहान्त हो गया और उनके पुत्र राव राजा रामप्रताप सिंह सीकर की गद्दी पर बैठे तब जयपुर में शिशु महाराजा राम सिंह द्वितीय सिंहासनारूढ़ थे। जयपुर की जनता ने अंग्रेज विरोधी भावना से उद्वेलित होकर जयपुर के पोलिटिकल एजेण्ट के सहायक अंग्रेज अधिकारी मि. ब्लेक को मार डाला। इस घटना से अंग्रेज और भी भयभीत और सतर्क हुए और जयपुर के सुसंगठित शेखावत संगठन का दमन करने के लिए ''शेखावाटी ब्रिगेड'' अभिधेय सैनिक संगठन गठित किया और मिस्टर फास्टर को उसका कमाण्डर नियुक्त किया।[13]

शेखावाटी ब्रिगेड की स्थापना का उद्देश्य शेखावाटी, तंवरावटी, चुरू और लुहारू क्षेत्र में पनप रहे ब्रिटिश सत्ता विरोधी विद्रोह विद्रोह को शान्त करना था। यद्यपि राजनैतिक परिस्थितियों से पीड़ित रियासती राजाओं ने अंग्रेजों से संधियां की थी, पर वस्तुतः वे भी अंग्रेजों के बढ़ते हुए प्रभाव को पसन्त नहीं कर रहे थे। किन्तु खुले रूप में अथवा खुले मैदान में उनका विरोध करने का साहस भी उनमें नहीं था। सबसे प्रबल कारण तो यह था कि मरहठों और पिंडारियों की लूट–खसोट और आए दिन के बखेड़ों से अंग्रेजो के माध्यम से छुटकारा मिला था। मरहठों की लोलुपता और अत्याचारों का धुंआ थोड़ा–थोड़ा दूर ही हुआ था। इसलिए राजाओं के सामने सांप–छुंछूदर की सी स्थिति थी। पर ठिकानेदार, छोटे भू–स्वामी और जनमानस अंग्रेजों के साथ हुए संधि समझौते से क्षुब्ध थे और वे अंग्रेजों की छत्रछाया को अमन चैन के नाम पर गलत मानते थे। फलतः अंग्रेज सत्ता और उनके प्रच्छन्न–अप्रच्छन्न समर्थक सहयोगियों से स्वातंत्रयचेता वीर अनवरत सक्रिय विरोध करते आ रहे थे।[14]

शेखावाटी ब्रिगेड में शेखावाटी के ठाकुर अजमेरी सिंह पालड़ी और ठाकुर डूंगर सिंह पाटोदा प्रभावशाली व्यक्ति थे। डूंगर सिंह पाटोदा तो अश्वरोही सेना में रिसलदार के पद पर थे।[15]

सीकर के **रावराजा रामप्रताप सिंह** और उनके उत्तराधिकारी वैमात्रेय भ्राता रावराजा भैरव सिंह, ख्वासवाल भ्राता मुकुन्द सिंह सिंहरावट, हुकम सिंह सीवोट, राम सिंह नेछवा आदि के पारस्परिक अनबन चल रही थी। राव राजा रामप्रताप सिंह के सगोत्रीय बंधु ठिकानेदार बठोठ, पाटोदा तथा सिंहासन और पालड़ी के अधीनस्थ जागीरदार राव राजा के विरूद्ध उनके वैमातृक भ्राता भैरव सिंह तथा खवासवाल बंधुओं की सहायता कर रहे थे। इधर अंग्रेज सत्ता इस विग्रह के सहारे सीकर और शेखावाटी में अपने हाथ–पैर फैलाने का अवसर ढूंढ रही थी और उधर राव राजा रामप्रताप सिंह अपने बल से उन्हें दबाने में सबल नहीं थे।[16] अतएव अंग्रेजों की सहायता से वे उनका दमन करना चाहने लगे। शेखावाटी की इस राजनैतिक परिस्थिति की अनुभूति कर ठाकुर डूंगर सिंह सं. 1891 वि. में अपने कुछ साथियों की तैयार कर शेखावाटी ब्रिगेड से विद्रोह कर बैठा और वहां से शस्त्र, घोड़े और ऊंट छीनकर विद्रोह बन गया। वह अंग्रेज शासित गांवों में लूट मार करने लगा। उधर सिंहरावट के खवासवाल ठाकुर बन्धु सीकर और अंग्रेज सरकार का विरोध कर ही रहे थे। इस स्थिति की विषमता का मूल्यांकन कर कर्नल एल्विस ने बीकानेर के महाराजा रतन सिंह से प्रबल अनुरोध किया कि डूंगर सिंह को येनकेन प्रकारेण बन्दी बनाया जाय। डूंगर सिंह की सिंहरावट के जागीरदारों के साथ सक्रिय सहानुभूति थी। बीकानेर नरेश ने लोढ़सर के ठाकुर खुमान सिंह को

विद्रोहियों का पता लगाने पर नियत किया। वह ठाकुर जवाहर सिंह बठोठ का साला था और स्वयं भी अंग्रेजों के विरूद्ध था। उसने उनका मार्गण कर किशनगढ़ राज्य के ढसूका नामक गांव में उनकी उपस्थिति की सूचना दी।[17] डूंगर सिंह ने इसी काल में मथुरा के एक धनाढय सेठ की हवेली पर धावा मारकर पर्याप्त द्रव्य लूट लिया और सेठ के परिवार को धन के लिए अपमानित भी किया। ठाकुर डूंगर सिंह और जवाहर सिंह का अजमेर मेरवाड़ा के प्रमुख भूपति राजा बलवन्त सिंह भिनाय तथा राव देवी सिंह खरवा तथा झड़वामा के गौड़ भैरव सिंह से निकट का सम्बन्ध था। राजा बलवन्त सिंह के उत्तराधिकारी राजा मंगल सिंह का पणिग्रहण भोपाल सिंह बठोठ की पुत्री तथा राव देवी सिंह खरवा के पुत्र कु. विजय सिंह करणेस का विवाह डूंगर सिंह की सहोदरा के साथ हुआ था और डूंगर सिंह स्वयं भड़वास के गौड़ों के वहां विवाहा था। डूंगर सिंह का इसलिए भी अजमेर मेरवाड़ा में आवागमन बना रहता था।[18]

राव राजा रामप्रताप सिह की असमर्थताजन्य आपत्ति पर कर्नल सदरलैंड ने शेखावाटी ब्रिगेड के सर्वोच्च अंग्रेज अफसर फास्टर को जयपुर, सीकर और अपनी अधीनस्थ सेना सहित आदेश दिया कि सिंहरावट दुर्ग को हस्तागत कर विद्रोह को समाप्त करें। मेजर फास्टर ने सिंहरावट को चारो ओर से घेरकर किले पर आक्रमण किया। ठाकुर मुकुन्द सिंह वगैरह एक माह तक सामुख्य कर अन्त में यकायक किला त्यागकर लड़ते हुए निकाल गए।[19]

उधर **डूंगर सिंह** ने संवत् 1893 चैत्रमास में सीकर राज्य के कतिपया गांवों पर धावे मारकर ठाकुर जवाहर सिंह के ससुराल लोड़सर ठाकुर खुमान सिंह के पास चला गया। बीकानेर राज्य की सेना ने ठाकुर हरनाथ सिंह मघरासर और माणिक्यचन्द सुराना के नेतृत्व में लोढ़सर दुर्ग पर आक्रमण किया। तब ठाकुर जवाहर सिंह, भीम सिंह और ठाकुर खुमान सिंह बीदावत लोढ़सर से निकल कर जोधपुर की ओर चले गए।[20]

संवत् 1895 वि. ठाकुर **जवाहर सिंह, डूंगर सिंह**, ठाकुर खुमान सिंह बीदावत लोढ़सर, हरि सिंह बीदावत, अन्न जी बीदावत भोजोलाई तथा कर्ण सिंह बीदावत रूतेली आदि ने बीकानेर के लक्ष्मीसर आदि अनेक ग्रामों को लूट लिया और बीकानेर से जोधपुर, किशनगढ़ होते हुए अजमेर मेरवाड़ा की ओर चले गए। ठाकुर डूंगर सिंह अपने ससुराल भड़वासा (अजमेर से दक्षिण में 10 मील दूर) स्थान पर विश्रांति के लिए जा ठहरा। उपयुक्त घटनाओं से अंग्रेज सत्ता और भी आतंकित होकर उत्तेजित हो गयी और इन स्वातन्त्रय संग्राम के सक्रिय योद्धाओं को पकड़ने, मारने और विश्रंखलित करने के लिए सभी उपाय करने लगी।[21] भड़वासे का भैरव सिंह गौड़ डूंगर सिंह का सम्बन्धी और विक्षुब्ध व्यक्ति था। अंग्रेजों ने उसे भय, आतंक और लोभ दिखाकर डूंगर सिंह को पकड़वाने के लिए सहमत कर लिया। भैरव सिंह गौड़ ने डूंगर सिंह के साथ कृत्रिम प्रात्मीयता प्रकट कर उसे दावत दी और छलपूर्वक मद्यपान से छकाकर अर्द्ध संज्ञाहीन कर दिया और उधर गुप्त रूप से अजमेर नसीराबाद में सूचना भेज दी। अजमेर और नसीराबाद की छावनी स्थिति अंग्रेज सेना ने युद्ध सज्जा में सुसज्जि होकर भड़वासा में विश्राम करते उस स्वातन्त्रय समर के पंक्तिय यौद्धा का यकायक जा घेरा। गौड़ों ने उसके शस्त्र पहिले ही अपने अधिकार में कर लिए थे। ऐसी अर्द्धचेतन–अवस्था में उस नर शार्दूल डूंगर सिंह को अंग्रेजों ने बन्दी बनाकर सुरक्षा की दृष्टि से राजपूताना से दूर आगरा के लालकिले की कारागार में ले जाकर बन्द कर दिया। इस छलाघात से जहां गौड़ों की पुष्कल निन्दा हुई वहां शेखावतों और डूंगर सिंह के सहयोगियों अपार रोष भड़क उठा। वे लोग प्रतिशोध के लिए उद्यत होकर आगरा दुर्ग पर आक्रमण कर डूंगर सिंह को कारावास से मुक्त करवाने के लिए कटिबद्ध हो गए।[22]

ठाकुर जवाहर सिंह ने आगरा दुर्ग पर आक्रमण कर डूंगर सिंह और उन्हीं की तरह पकड़े गए अन्य कतिपय ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी स्वतन्त्रता सेनानियों को उन्मुक्त करने की योजना बनाई। इस योजना की सफलता के लिये अपने ग्राम बठोठ के नीठारवाल गोत्र के जाट, लोटिया और मीणा जाति के योद्धा सांवता को आगरे भेजा तथा वहां की अन्तः बाह्म स्थिति की जानकारी मंगवाई और समस्त सूचनाएं प्राप्त कर विक्रमी संवत् 1903 में ठाकुर जवाहर सिंह

ने ठाकुर भोपाल सिंह, ठाकुर बख्तावर सिंह श्यामसिंहोत श्यामगढ़ (शेखावाटी), ठाकुर खुमान सिंह बीदावत लोढसर, अलसीसर, कान सिंह, उजीण सिंह मींगणा, जोर सिंह खारिया–बैरीशाल सिंह, हरि सिंह प्रभृति बीदावत यौद्धा तथा हठी सिंह कांधलोत, मान सिंह लाडखानी, सिंहरावट के हुकम सिंह, चिमन सिंह, लोटिया जाट, सांवता, करणिया मीणा, बालू नाई और बरड़वा के लाडखानी, सिंहरावट के हुकम सिंह, चिमन सिंह, लोटिया जाट, सांवता, करणिया मीणा, बालू नाई और बरड़वा के लाडखानी शेखावतों आदि कोई चार सौ पांच वीरों ने बारात का बहाना बना कर आगरा की ओर प्रस्थान किया और उपयुक्त अवसर की टोह में दूल्हा के मामा के निधन के कारण बना कर पन्द्रह दिन तक आगरा में रूके रहे। तदन्तर मुहर्रम के ताजियों के दिन यकायक निश्रयणी (सीढ़ी) लगा कर दुर्ग में कूद पड़े। किले के रक्षकों, प्रहरियों और अवरोधकों को मार काट कर डूंगर सिंह सहित समस्त बंदियों को मुक्त कर निकाल दिया। इस महान साहसिक कार्य से अंग्रेज सत्ता स्तब्ध रह गई। अंग्रेजों की राजनैतिक पैठ उठ गई। आजादी के बलिदानी यौद्धाओं के देश भर में गुण गीत गूजने लगे। आगरा के कथित युद्ध में ठाकुर बख्तावर सिंह शेखावत श्यामगढ़, ठाकुर उजीण सिंह मींगणा (बीकानेर) हणू तदान मेहडू चारण ग्राम दांह (सुजानगढ़ तहसील) आदि लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।[23]

डूंगजी के साले भैरूसिंह ने डूंगजी को भोजन पर अपने यहां बुलवाया और वहां अत्यधिक शराब पिलाकर उन्हें पकड़वा दिया। अंग्रेजों ने उन्हें आगरा के दुर्ग में बंद कर दिया। **डूंगजी** की पत्नी की फटकार से जवाहर जी ने उन्हें छुड़वाने की प्रतिज्ञा की। कहा जाता है कि लोटिया जाट और करणा मीणा अपनी वीरता और बुद्धिमता से डूंगजी को छुड़वाकर लाए।[24]

बीकानेर के पास घड़सीसर में अंग्रेजी फौज ने बीकानेर और जोधपुर राज्य की फौजों के साथ मिलकर डूंगजी–जवाहर जी को घेर लिया। जवाहर जी तो भागकर बीकानेर रियासत के खैरखट्टा स्थान र पहुंच गए, जहां महाराज रतन सिंह ने उन्हें प्रेमपूर्वक रखा। डूंगजी जैसलमेर में गिरदड़ा की काकीमैडी पहुंच गए, जहां जोधपुर की सेना ने उन्हें छलपूर्वक कैद करके अंग्रेज सेना को सौंप दिया। इससे लोगों में असंतोष की ज्वाला भड़क उठी। अंग्रेजों ने डूंगजी को वापस जोधपुर राज्य की सेना को सौंप दिया। जोधपुर के दुर्ग में ही डूंगजी का निधन हुआ।

लोठूजी निठारवाल का योगदान

लोठू निठारवाल का जन्म जाट परिवार में 1804 ई. में रींगस में हुआ था, जहां से वह, वहां के ठाकुर के अनबन होने के कारण अपनी बहन के पास बठोठ में आ गए। यहां इनका सम्पर्क डूंगजी–जवाहरजी से हुआ।[25]

जब डूंगजी को अंग्रेजों ने गिरफ्तार करके आगरा की जेल में बंद कर दिया था, तो लोठू ने बालू नाई, सांखू लुहार व करणा मीणा आदि के साथ मिलकर डूंगजी को आगरा से रिहा करवाने की योजना बनाई और अंग्रेजों को चकमा देने के लिए अपने साथियों के साथ एक बारात के रूप में आगरा पहुंचे तथा अदम्य साहस का परिचय देते हुए डूंगजी को रिहा करवा लाए। इसके बाद लोठूजी, डूंगजी, जवाहरजी के साथ अंग्रेज विरोधी गतिविधियों को अंजाम देते रहे। 1855 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।[26]

क्रांति का समापन

क्रांति का अन्त सर्वप्रथम दिल्ली में हुआ, जहाँ 21 सितम्बर, 1857 को मुगल बादशाह को परिवार सहित बन्दी बना लिया। जून, 1858 तक अंग्रेजों ने अधिकांश स्थानों पर पुनः अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया। किंतु तांत्या टोपे ने संघर्ष जारी रखा। अंग्रेजों ने उसे पकड़ने में सारी शक्ति लगा दी। यह स्मरण रहे कि तांत्या टोपे ने राजस्थान के सामन्तों तथा जन साधारण में उत्तेजना का संचार किया था। परन्तु राजपूताना के सहयोग के अभाव में तांत्या टोपे

को स्थान–स्थान पर भटकना पड़ा। अंत में, उसे पकड़ लिया गया और फांसी पर चढ़ा दिया।[27]

क्रांति के दमन के पश्चात् कोटा के प्रमुख नेता जयदयाल तथा मेहराब खाँ को एजेन्सी के निकट नीम के पेड़ पर सरे आम फांसी दे दी गई। क्रांति से सम्बन्धित अन्य नेताओं को भी मौत के घाट उतार दिया अथवा जेल में डाल दिया। अंग्रेजों द्वारा गठित जांच आयोग ने मेजर बर्टन तथा उसके पुत्रों की हत्या के सम्बन्ध में महाराव **राम सिंह** द्वितीय को निरपराध किंतु उत्तरदायी घोषित किया। इसके दण्डस्वरूप उसकी तोपो की सलामी 15 तोपों से घटाकर 11 तोपे कर दी गई। जहाँ तक आउवा ठाकुर का प्रश्न है, उसने नीमच में अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण (8 अगस्त, 1860) कर दिया था। उस पर मुकदमा चलाया गया, किंतु बरी कर दिया गया।[28]

स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के कारण :–

भारतीयों के इस संगठित और सामूहिक विरोध से अंग्रेज घबरा गये। क्रान्तिकारियों ने प्रारम्भ में अंग्रेजों को कई स्थानों पर पराजित किया लेकिन अपने विशाल सैनिक शक्ति तथा यहां के रियासतों के शासकों की सहानुभूति के बल पर भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का दमन कर दिया। अन्य भी कई कारण थे जो इस संग्राम की सुफलता में बाधक बनें, यथा–

1 निश्चित योजना के अभाव के कारण क्रान्तिकारी आपस में सम्पर्क में नहीं आ सके।

2 क्रान्तिकारियों के पास अंग्रेजों की तुलना में परम्परागत सैनिक शक्ति व सीमित साधन थे।

3 देशी रियासतों का क्रान्तिकारियों को सहयोग नहीं मिला।

4 क्रान्ति की शुरूआत निर्धारित योजनानुसार 31 मई, 1857 को होनी थी लेकिन कुछ घटनाक्रम ऐसा हुआ कि क्रान्ति 10 मई से ही शुरू हो गई।

5 लार्ड कैनिंग की कूटनीति से देशी रियासतों को अपने पक्ष में कर लिया और क्रान्तिकारियों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली।

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम का महत्व एवं परिणाम :–

यद्यपि 1857 की क्रांति असफल रही किंतु उसके परिणाम व्यापक सिद्ध हुए। क्रांति के पश्चात् यहाँ के नरेशो को ब्रिटिश सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया क्योंकि राजपूताना के शासक उनके लिए उपयोगी साबित हुए थे। अब ब्रिटिश नीति में परिवर्तन किया गया। शासकों को संतुष्ट करने हेतु 'गोद निषेध' का सिद्धान्त समाप्त कर दिया गया। राजकुमारो के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रबन्ध किया जाने लगा। अब राज्य कम्पनी शासन के स्थान पर ब्रिटिश नियंत्रण में सीधे आ गये। साम्राज्ञी विक्टोरिया की ओर से की गई घोषणा (1858) द्वारा देशी राज्यों को यह आश्वासन दिया गया कि देशी राज्यों का अस्तित्व बना रहेगा। क्रांति के पश्चात् नरेशों एवं उच्चाधिकारियों की जीवन शैली में पाश्चात्य प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता हैं। अब राजस्थान के राजे–महाराजे अंग्रेजी साम्राज्य की व्यवस्था में सेवारत होकर आदर प्राप्त करने व उनकी प्रशंसा करने के आदी हो गए थे। जहाँ तक सामन्तों का प्रश्न है, उसने खुले रूप में ब्रिटिश सत्ता का विरोध किया था। अतः क्रांति के पश्चात् अंग्रेजों की नीति सामन्त वर्ग को अस्तित्वहीन बनाने की रही। जागीर क्षेत्र की जनता की दृष्टि में सामन्तों की प्रतिष्ठा कम करने का प्रयास किया गया। सामन्तों को बाध्य किया गया कि सैनिकों को नगद वेतन देवें। सामन्तों के न्यायिक अधिकारों को सीमित करने का प्रयास किया। उनके विशेषाधिकारों पर कुठाराघात किया गया। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि सामन्तों का सामान्य जनता पर जो प्रभाव था, ब्रिटिश नीतियों के कारण कम करने का प्रयास किया गया।[29]

क्रान्ति के बाद अंग्रेजी सरकार ने रेल्वे व सड़कों का जाल बिछाने का काम शुरू किया, जिससे आवागमन की व्यवस्था तेज व सुचारू हो सके। मध्यम वर्ग के लिए शिक्षा का प्रसार कर एक शिक्षित वर्ग खड़ा किया गया, जो उनके लिए उपयोगी हो सके। अर्थतन्त्र की मजबूती के लिए वैश्य समुदाय को संरक्षण देने की नीति अपनाई। बाद में वैश्य समुदाय राजस्थान में और अधिक प्रभावी बन गया।

1857 की क्रांति ने अंग्रेजों की इस धारणा को निराधार सिद्ध कर दिया कि मुगलों एवं मराठों की लूट से त्रस्त राजस्थान की जनता ब्रिटिश शासन की समर्थक है। परन्तु यह भी सच है कि भारत विदेशी जुये को उखाड़ फेंकने के प्रथम बड़े प्रयास में असफल रहा। राजस्थान में फैली क्रांति की ज्वाला ने अर्द्ध शताब्दी के पश्चात् भी स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान लोगों को संघर्ष करने की प्रेरणा दी, यही क्रांति का महत्त्व समझना चाहिए।[30]

सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में यद्यपि सफलता नहीं मिली लेकिन अंग्रेजों को प्रशासनिक नीति में परिवर्तन और सेना के पुनर्गठन के लिए विवश होना पड़ा, यथा–

1 ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त करके भारत का प्रशासन सीधे ब्रिटिश सरकार के अधीन हो गया।

2 सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से भविष्य में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरणा मिली।

3 देशी रियासतों के साथ अंग्रेजों की नीति में परिवर्तन आया। महारानी ने अपनी घोषणा में देशी राजाओं को उनके अधिकार, सम्मान व गौरव दिलाने की बात कही लेकिन उनको दत्तक पुत्र गोद लेने की अनुमति नहीं दी गई।

4 अंग्रेज समझ गये कि हिन्दू–मुस्लिम एक रहे तो अंग्रेज अधिक समय तक शासन नहीं कर पाऐंगे। अतः उन्होंने फूट डालो व राज करो की नीति अपनायी व हिन्दू व मुस्लिम वैमनस्य को जन्म दिया।

5 इस क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने सेना का पुनर्गठन किया। सेना में ब्रिटिश सैनिकों की संख्या बढ़ा दी और तोपखाना भारतीयों के पास नहीं रहा।

यद्यपि अंग्रेजों ने अपनी सैनिक शक्ति और कूटनीति के बल पर भारतीयों के इस संघर्ष को दबा दिया लेकिन इस आन्दोलन ने यह साबित कर दिया कि यदि लेकिन इस आन्दोलन ने यह साबित कर दिया कि यदि भारतीय संगठित होकर नियोजित प्रयास करें तो अंग्रेजों को भारत से बाहर किया जा सकता है। अंग्रेजों को भी यह एहसास हो गया कि भारत पर शासन करना है तो फूट डालो व राज करो की नीति अपनानी होगी। इस प्रकार भारत में राष्ट्रीयता का विकास हुआ और अन्ततः इसी के फलस्वरूप भारत स्वतंत्र भी हुआ।

***शोधार्थी**
इतिहास विभाग
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 इण्डिया, फॉरेन एण्ड पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट, सिलेक्सन फ्रोम एज्युकेशनल रिकॉर्डस ऑफ गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया, सख्ं या 65, कलकत्ताः फॉरेन डिपार्टमेंट, 1868, पृ. 47

2 पीटरसन, पीटर, इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, प्रोविंशियल सिरीज़ राजपूताना, कलकत्ताः सुप्रिन्टेन्डेन्ट ऑफ गर्वन्मेंट प्रिन्टिंग, 1908, पृ. 254

3 गहलोत, जगदीशसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 187

4 मिश्र, रतनलाल, पूर्वोक्त, पृ. 191

5 इण्डिया, फॉरेन एण्ड पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट, पूर्वोक्त, पृ. 47

6 पीटरसन, पीटर, पूर्वोक्त, पृ. 254

7 गहलोत, जगदीशसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 188

8 पुरोहित, महावीर, सीकर का स्वकथन, सीकरः शेखावत प्रिंटिंग प्रेस, 2015, पृ. 162

9 आर्य, हरफूलसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 63

10 गहलोत, जगदीशसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 188

11 पुरोहित, महावीर, पूर्वोक्त, पृ.

12 सक्सेना, के. एस., दि पोलिटिकल मोवमेंट्स एण्ड अवेकनिंग इन राजस्थान, नई दिल्लीः एस. चाँद एण्ड कम्पनी, 1971, पृ. 192–193

13 मिश्र, रतनलाल, पूर्वोक्त, पृ. 195

14 गुप्ता मोहनलाल, पूर्वोक्त, पृ. 258

15 अग्रवाल, बी.डी., पूर्वोक्त, पृ. 48

16 पूर्वोक्त, पृ. 59

17 लोहिया, बी.एल., राजस्थान की जातियां, कलकत्ताः बजरंगलाल लोहिया प्रकाशन, 1954, पृ. 156–157

18 प्रकाश, टी.सी., शेखावाटी वैभव, शिमला (झुन्झुनूं)ः शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान, 1993, पृ. 17–18

19 मंडावा, देवीसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 165

20 मिश्र, रतनलाल, पूर्वोक्त, पृ. 151

21 भूरसिंह, विविध संग्रह (शेखावाटी का इतिहास) हस्तलिखित, पृ. 59 (सरस्वती पुस्तकालय, फतेहपुर में संरक्षित)

22 बख्शी, झूंथालाल, माधव वंश प्रकाश (हस्तलिखित) सीकर पृ. 93 (सरस्वती पुस्तकालय, फतेहपुर में संरक्षित)

23 शर्मा, एम. एल., पूर्वोक्त, पृ. 167

24 गहलोत, जगदीशसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 185–186

25 दिनमणि, श्रीगोपाल, पूर्वोक्त, पृ. 69

26 बख्शी, झूंथालाल, पूर्वोक्त, पृ. 83

27 शर्मा, झाबरमल, सीकर का इतिहास, कलकत्ताः राजस्थान एजेन्सी, 1922, पृ. 60

28 दिनमणि, श्रीगोपाल, पूर्वोक्त, पृ. 74

29 आर्य, हरफूलसिंह, पूर्वोक्त, पृ. 164–165

30 बेली, सी.ए., गजेटियर्स राजपूताना जयपुर, भाग–2, कलकत्ताः सुप्रिन्टेन्डेन्ट ऑफ गर्वमेंट प्रिन्टिंग, 1879, पृ. 107